thearyasamaj.org

संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : १५ ● १४ मार्च, २०१५ वैशाख कृ. दशमी, सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

गुलामी से अभिशप्त भारत माता को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराने के लिए क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद की नींव रखी महर्षि दयानन्द ने

श्री देवेन्द्रपाल वर्मा

अमरोहा आर्य समाज में दिनांक १ अप्रैल को आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुये कहा कि युग प्रवर्तक आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सारे संसार के उपकार के लिए एक महान धार्मिक सामाजिक तथा राजनीतिक आन्दोलन को जन्म दिया। उन्होंने सुप्त जनमानस को जागृत करते हुये देशवासियों को स्वदेशी स्वभाषा तथा स्वराज्य का अभूतपूर्व सन्देश दिया। उन्होंने आर्य समाज रूप में एक समग्र क्रान्ति का सृजन किया।

सभा प्रधान जी ने कहा कि आज सारा संसार महर्षि दयानन्द का ऋणी है। उन्होंने सन् १८७५ में आर्य समाज की स्थापना करके नारी उत्थान बाल विवाह सती प्रथा, छुआ-छूत के निषेध, वैदिक सभ्यता व संस्कृति के उन्नयन तथा स्वतंत्रता और स्वराज्य का अभूतपूर्व मन्त्र देते हुये गुलामी से अभिषप्त भारत माता को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराने के लिए भारत में क्रान्तिकारी राष्ट्रवाद की नीव रखी। जिसके फलस्वरूप महादेव गोविन्द रानाडे योगी अरविन्द लोक मान्य बाल गंगाधर

तिलक लाला लाजपत राय, श्याम जी कृष्ण वर्मा, पं. राम प्रसाद बिस्मिल भाई परमानन्द सरीखे महान राष्ट्रवादियों का उदय हुआ। महर्षि ने शिक्षा के क्षेत्र में भी महान् क्रान्ति की। गोरक्षा मद्यनिषेध की दिशा में भी योग दान करने के साथ ही बलिप्रथा, दहेज प्रथा आदि असंख्य कुरीतियों पर तीव्र प्रहार किये। प्रधान जी ने यह भी घोषणा की कि आर्य प्रतिनिधि सभा अगले मई मास में मुरादाबाद में एक विशाल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन आयोजित कर रही है तथा रामगढ़ तल्ला स्थित महात्मा नारायण स्वामी आश्रम में उत्तर प्रदेश सभा की अन्तरंग का अधिवेशन और योग शिविर का भी भव्य आयोजन जून मास में किया जायेगा।

सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा आर्य समाज अमरोहा के पूर्व प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी के निधन पर दुखी परिजनों को सांत्वना एवं दिवंगतात्मा को श्रद्धांजलि देने के लिये यहां आये थे। आर्य समाज परिसर में सभा प्रधान जी के साथ आर्य समाज के प्रधान श्री हेतराम सागर मंत्री, राजनाथ गोयल हरिश्चन्द्र आर्य, विनय प्रकाश आर्य तेजपाल सिंह, डॉ. अशोक कुमार आर्य सम्पादक, आर्यावर्त केसरी सभा द्वारा नियुक्त आर्य समाज के मण्डलीय निरीक्षक मंगू सिंह आर्य आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर सभा प्रधान जी को आर्य समाज की ओर से वैदिक साहित्य भी भेंट किया गया।

-अशोक कुमार आर्य

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन करने का निश्चय मुरादाबाद में 29, 30, 31 मई, 2015 को होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा का अधिवेशन दिनांक ५ अप्रैल, १५ को आर्य समाज चौक, इलाहाबाद में सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से दिनांक २६, ३०, ३१ मई, १५ को मुरादाबाद में विशाल प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन करने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया।

सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने प्रदेश से आये सभी पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों व विशेष आमन्त्रित सदस्यों से अपने सम्बोधन में कहा कि हम सभी ने विगत आगरा के आर्य महासम्मेलन में निश्चय किया था कि प्रदेश के सभी अंचलों में विशाल आर्य महा सम्मेलन समय-समय पर हम आयोजित करेंगे। उसी श्रृंखला में दिनांक २६, ३०, ३१ मई, १५ को मुरादाबाद में आर्य महासम्मेलन करने का यह निश्चय किया गया है।

आज महर्षि दया नन्द सरस्वती के समय से भी ज्यादा ढोंग पाखण्ड समाज में फैल रहा है, धर्म के नाम पर अनेक मठाधीश टेलीविजन के माध्यम से अपना अपना प्रचार प्रसार करने में लगे हुये हैं। पराधीन भाव में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश को स्वतंत्र सुखी समृद्ध बनाने के लिए मानव जीवन के निर्माणार्थ समाज सुधार का मार्ग दर्शन देने के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी। मानव जीवन निर्माण के लिए पूर्वजों द्वारा निर्धारित पंचयज्ञों (ब्रह्मयज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, बलि वैश्व देव यज्ञ एवं अतिथि यज्ञ) को महायज्ञ कह कर उन्हें नित्य करना मानव का धर्म बताया। महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज आन्दोलन ने सभी बुराइयों के विरूद्ध सबल आवाज उठायी। बुराइयां मिटने लगीं। स्वराज्य आन्दोलन चला देश स्वतंत्र हुआ। स्वाधीनता के बाद अपनी सरकार बनी। सम्भवतः आर्य समाज ने समझा हमारा आन्दोलन पूर्ण हो गया। बस आन्दोलन में शिथिलता आने लगी फलतः सभी बुराइयां आज नये नये रूप में फैलकर राष्ट्र को समाज को तोड़ रही हैं।

अतः हम सभी आर्यों का धर्म है कि हम सभी प्रकार का आलस्य प्रमाद और वैर भाव को सर्वदा तिलांजलि देकर आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलाने में एक जुट होकर लग जायें और देश को सभी बुराइयों से रहित सुखी समृद्ध बनाने के लिए कृत संकल्प हों।

प्रधान जी ने कहा कि-इसी भावना से आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ने इस वर्ष मुरादाबाद में दिनांक २६, ३०, ३१ मई, १५ को विशाल आर्य महा सम्मेलन आयोजित करने का निश्चय किया है। प्रदेश की सभी इकाई आर्य समाजें, जिला सभायें अपने अपने क्षेत्र में आर्य महा सम्मेलन की सफलता के लिए अभी से जन जन से सम्पर्क में जुट जायें ताकि लाखों की तादाद में आर्य नर- नारी महा सम्मेलन में पहुंच कर महा सम्मेलन को सफल बनायें।

महासम्मेलन में देश के अनेकों मूर्धन्य विद्वानों सन्यासियों के भजन, उपदेश सुनने का सौभाग्य प्राप्त होगा। इस अवसर पर आयोजित राष्ट्र कल्याण महायज्ञ में सभी को अपनी अपनी आहुति देने का सुयोग मिलेगा।

अन्तरंगाधिवेशन में भाग लेने के लिए पहुंचने पर आर्य समाज चौक, इलाहाबाद के पदाधिकारियों ने सभा के पदाधिकारियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। अन्तरंगाधिवेशन की अध्यक्षता सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा ने की।

अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने कहा कि आज सारे देश में साम्प्रदायिक विद्वेष बैर भाव फैल कर देश को तोड़ रहा है। देश को टूटने से बचाने के लिए आज सर्वाधिक आर्य समाज आन्दोलन की आवश्यकता है।

अतः सभी नर-नारी इस पर गम्भीर चिन्तन करें। जगह जगह आर्य सम्मेलनों का आयोजन किया जाये। सभी आर्यजन आर्य समाज की विचार धारा को जन सामान्य में फैलाने के लिए अपने अपने जीवन के महत्वपूर्ण समय का कुछ अंश का योगदान (यथाशक्ति अधिक से अधिक) देने का संकल्प लें उन्होंने आर्य वीर दल की जगह जगह शाखायें खोलने पर भी बल दिया। उन्होंने कहा हमारे समर्पण से आर्य समाज आन्दोलन सफल होगा। आन्दोलन सफल होना तो देश सुखी व समृद्ध होगा और महर्षि दयानन्द की अन्तःभावना पूर्ण होगी।

दिनांक १३, १४, १५ जून, २०१५ को नारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़ तल्ला, नैनीताल में योगशिविर होगा तथा एक दिन अन्तरंग सभा अधिवेशन होगा। योग शिविर में भाग लेने वाले अपने पहुंचने की स्वीकृति १५ दिन में सभा कार्यालय में अवश्य भेज दें। जिससे उत्तम व्यवस्था की जा सके।

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

राजनेता वाणी का संयम न तोड़ें।

आज कल राजनीति में अपनी पैद बनाने वाले, अपने को खबरों में बनाये रखने के लिए उचित अनुचित की समीक्षा किये बिना कुछ न कुछ बोलते ही रहते हैं। जिससे प्रायः समाज में अशान्ति फैलती है। राष्ट्र धर्म नष्ट होता है विदेशी शक्तियां उसका लाभ उठाने का प्रयत्न करती है। देश में विघटन की दीवार देश को ही नष्ट करने का प्रयत्न करती है। राजनीति का कार्य राष्ट्र को सुखी बनाने का मार्ग दर्शन देना है परन्तु आज यह नहीं हो रहा। राजनीति का प्रयोग क्षुद्र स्वार्थ के लिए ही किया जा रहा है। राजनेता निजी स्वार्थ के लिए साम्प्रदायिक दुर्भावना फैलाने में भी संकोज नहीं करते। धर्म निरपेक्ष व साम्प्रदायिक-यह नाम तो अब रूढ़िगत हो गये हैं।

धर्म एक है अनेक नहीं! सम्प्रदाय अनेक है। प्रत्येक सम्प्रदाय के उदय में समाज संगठन व सुधार की ही भावना रही है। वेदों से जब पण्डित लोग पशुबलि का समर्थन कर रहे थे तो गौतम बुद्ध ने उसके विरूद्ध अहिंसा परमोधर्म का नारा देकर उसका विरोध किया उनसे जब कहा गया कि यह तो वेदों में है तो उन्होंने कहा कि मैं ऐसे वेद नहीं मानता। जब उनसे कहा गया वेद ईश्वरीय वाणी है तो उन्होंने कहा कि मैं ईश्वर को भी नहीं मानता। धीरे धीरे वह बौद्धमत हो गया। नास्तिकता बढ़ने लगी। आदि शंकराचार्य ने तब आकर नास्तिकता के विरूद्ध नारा दिया, देश के चारों ओर घूम-घूम कर आस्तिकता फैलाने का काम किया। यहूदियों की जोर जबरदस्ती के विरूद्ध ईसा मसीह ने आन्दोलन चलाया, उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया, उनका आन्दोलन तेज हुआ बाद में वह ईसाई मत हो गया। १५०० वर्ष पूर्व मुस्लिम देशों में बढ़ती बुत परस्ती के विरूद्ध मुहम्मद साहब ने आवाज उठायी वह बाद में इस्लाम मत हो गया। सभी मतों के अनुयायी अपने उन मतों के प्रचार व प्रसार में अपना योगदान देने लगे। ईसाई बहला फुसला कर तो मुसलमान डरा धमका कर अपना मत बढ़ाने लगे। पराधीन भारत में महर्षि दयानन्द का जन्म हुआ उन्होंने पराधीनता के मूल में अशिक्षा नारी शोषण, मूर्ति पूजा ढोंग पाखण्ड को पाया देश को स्वतंत्र बनाने व सत्य धर्म के प्रसार के लिए आर्य समाज की स्थापना आन्दोलन के रूप में की। आन्दोलन रंग लाया, स्वाधीनता आन्दोलन तीव्र गति से चला जिसमें सभी हिन्दू मुसलमान ईसाई बौद्ध पारसियों ने बिना किसी भेदभाव के संगठित रूप में भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया।

आजादी के बाद अपनी सरकार बनी अपना संविधान बना। संविधान में सभी मत मतान्तर वालों को अपनी पूजा पद्धति निर्विघ्न प्रयुक्त करने के लिए राष्ट्र को पन्थ निरपेक्ष घोषित किया गया। विदेशी शिक्षा से शिक्षित नेताओं ने धर्म व पन्थ के अन्तर को जानने का प्रयत्न ही नहीं किया। पन्थ को ही धर्म मान लिया और पन्थ निरपेक्ष के स्थान पर धर्म निरपेक्ष राष्ट्र कहना प्रारम्भ किया और सभी मतवाले अपना मत बढ़ाने के प्रयत्न में लग गये। भारतवासियों का हिन्दू नाम मुसलमान आक्रान्ताओं ने रखा था। परन्तु अब वही शब्द सामान्य भारतीयों के लिए प्रयुक्त होने लगा। ईसाई मुसलमान हिन्दू बौद्ध आदि वर्ग के रूप में जाना जाने लगा। ईसाइयों व मुसलमानों के मतान्तरण कार्य की प्रगति को देखकर कुछ हिन्दू नेताओं ने भी ईसाई मुसलमान बन गये हिन्दुओं को हिन्दू बनाने का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

राजनीति में नेताओं ने अपनी सत्ता पाने व बनाये रखने के लिए यह वर्ग भेद बढ़ाना प्रारम्भ किया। अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक खेमे में देश को बांट सा दिया। अपना वोट बैंक बढ़ाने के लिए तथाकथित अल्प संख्यकों को उन्हें विशेष सुविधायें दिलाने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी। राजीव गांधी ने अपने शासन काल में सर्वोच्च न्यायालय के शाहबानों केस में शाहबानों के पक्ष में आये निर्णय को मजहब परस्त मुसलमानों के दबाव में अमान्य कर दिया। मुल्ला मौलवियों के मजहबी फरमान को मान्यता दे डाली फलतः एक देश में दो सम्विधान चालू हो गये। अन्ततः हर सुख सुविधा उसी आधार पर दी व दिलायी जाने लगी। देश के एक वर्ग को साम्प्रदायिक तथा एक वर्ग को धर्मनिरपेक्ष नाम दे दिया। जो तथाकथित अल्प संख्यकों की जायज नाजायज मांग को पूर्ण करने को कहे वह धर्म निरपेक्ष और जो इसके विरूद्ध कुछ कहे उसे साम्प्रदायिक बना दिया गया।

हिन्दू आबादी को निरन्तर घटता देखकर कुछ हिन्दू नेताओं ने घर वापसी आन्दोलन चलाया तो अपने को धर्म निरपेक्ष कहने वाले राजनेताओं ने उसके विरूद्ध आवाज लगानी आरम्भ कर दी परन्तु इसाई मुसलमान बनाने की प्रक्रिया के विरूद्ध कुछ भी बोलना मुनासिब नहीं समझा। क्योंकि उससे उनका वोट बैंक घटने का अन्देशा था। फलतः आज देश में एक दूसरे के प्रति विद्वेष की आग सुलगने लगी है। आजम खां जैसे अपने को मुस्लिम नेता कहने वाले तथा साक्षीमहराज, साध्वी प्राची विश्व हिन्दू परिषद् के तोगड़िया जी आदि एक दूसरे के प्रति अवांछनीय व अभद्र टिप्पणियां करके अखबारों की सुर्खियों में बने रहना चाहते हैं, राष्ट्र टूटे या सम्हले उससे उनका कोई वास्ता नहीं।

ऐसे डावांडोल देश विघटक वायु मण्डल से देश को मुक्त बनाने के लिए प्रबुद्ध नागरिकों को आगे बढ़ना चाहिए और ऐसी अभद्र भाषा बोलने वालों की वाणी पर अंकुश लगाने के लिए मनसा वाचा कर्मणा सन्नद्ध हो जाना चाहिए। सरकार किसी भी दल की हो संविधान के अनुसार सभी के व्यवहार व आचरण देखना उसका दायित्व है और यथावश्यक निःसंकोच ऐसे विभेदक भाषण कर्ताओं को दंण्डित करने में संकोच नहीं करना चाहिए सभी राजनीतिक दल व सत्तासीन दल राष्ट्र हित के लिए इसपर गम्भीर चिन्तन करें और देश को टूटने से बचाने के लिए सभी को मर्यादा में ही रखने व बोलने के लिए बाधित करने को संकल्पबद्ध हों।

-सम्पादक

स्वत्त्व का विस्तार

प्रताप कुमार 'साधक'

संसार में दो ही सनातन चेतन सत्ताएं हैं -

ईश्वर और जीव । इनमें से ईश्वर एक ही है, जबकि जीव अनेक असंख्य। प्रत्येक जीव अपने-अपने कृत कर्मो के आधार पर फल भोगता है और नए कर्म करता है। मनुष्य योनि में जीवात्मा को नैमित्तिक ज्ञान प्राप्त करने, तदनुसार उचित-अनुचित, धर्माधर्म का निर्णय करने एवं इच्छानुसार आहार-विचार-व्यवहार करने की पूरी स्वतन्त्रता होती है, अतः इस योनि में किए गए कर्मानुसार उन्हें ईश्वर द्वारा कर्मफल प्रदान किया जाता है। अन्य योनियों में जीवात्मा को यह सुविधा नहीं रहती, क्योंकि उनमें निर्धारित स्वाभाविक ज्ञान ही प्राप्त होने से सत्यासत्य का निर्पाय कर सकने की क्षमता नहीं होती। अतः उन्हें भोग योनि कहा जाता है जिसमें जाकर जीवात्मा मनुष्य - योनि में किए गए कर्मो के फल भोगता है। ज्ञान-विवेक से रहित होने के कारण इन्हें अन्धकारमयी योनियों कह सकते हैं - यही नर्क हैं। यजुर्वेद (४०-३) में इन्हीं योनियों को 'असुर्थ्य नाम ते लोका' कहा गया है।

यद्यपि सभी जीवात्माएं पृथक्-पृथक हैं, जिनका आपस में कोई स्थायी सम्बन्ध नहीं है, तथापि शरीर धारण करने के बाद सांसारिक रूप से उनका अस्थायी सम्बन्ध बन जाता है, जो शरीर त्यागते ही समाप्त हो जाता है। माता-पिता, पुत्र-पुत्री, भाई-बहन, रिश्तेदार, पति-पत्नी, मित्र-शत्रु, गुरू-शिष्य आदि इसी प्रकार के अस्थायी सम्बन्ध है, जिनके प्रति मनुष्य अपनत्व का अनुभव करता है, उसके सुख-दुःख से प्रभावित होता है। स्वत्त्व अर्थात् 'यह मेरा है' का विचार जन्मते ही प्रारम्भ हो जाता है। इसी को ममत्त्व भी कहते हैं। नवजात शिशु पहला सम्बन्ध अपनी माँ से स्थापित करता है। शैशव अवस्था में उसका ममत्त्व मुख्यतः अपनी मां से ही रहता है, जो धीरे-धीरे पिता, भाई, बहन आदि साथ रहने वालों के साथ जुड़ने लगता है। बाल्यावस्था में जब वह विद्यालय जाने लगता है तो उसके 'स्वत्त्व' का विस्तार होता है। अपनी पसन्द के छात्र-छात्रओं तथा गुरूओं को अपना मानने लगता है।

किशोरावस्था में कोई एक या अधिक मित्र विशेष आत्मीय बन जाते हैं। यहीं से राग-द्वेष का प्रारम्भ होता हैं। जिससे हमारा राग होता है, उस पर अपना अधिकार समझते हैं। कोई अन्य उसे अपना समझने लगे, तो हम उससे द्वेष करते है। विवाह हो जाने पर पति-पत्नी तथा सन्तान को अपना समझते हैं, उनके सुख-दुःख को अपना सुख-दुःख मानते हैं। उनके कारण हमें मोह और शोक होता है। अपनेपन का यह अनुभव केवल चेतन व्यक्तियों या पशु-पक्षियों के प्रति ही नहीं अपितु अचेतन भू, भवन, सम्पत्ति के प्रति भी होता है। 'एक बच्चे की दुर्घटना हो गई।' - सुनकर जो व्यक्ति किंचित मात्र दुःख का अनुभव करता है, अथवा एक समाचार समझकर कुछ भी प्रभावित नहीं होता, वही 'आपके बच्चे की दुर्घटना हो गई।'- ऐसा सुनते ही अत्यन्त विह्लत हो जाता है, तुरन्त क्रियाशील हो जाता है। अनेकों पशु-पक्षियों की हिंसा करने या करवाने वाले मांसाहारी व्यक्ति अपने पालतू पशु-पक्षी की मृत्यु से दुःखी हो जाते है। अपनी सम्पत्ति की क्षति होने पर भी दुःख-शोक का अनुभव होता है।

मानव की आदर्श स्थिति, जब वह समस्त प्राणियों को अपने समान ही मानने, समझने और अनुभव करने लगता है, का चित्रण यजुर्वेद (४०-७) में स्पष्ट किया गया है :-

यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुपश्यतः।।

अर्थः जिस अवस्था में मनुष्य समस्त प्राणियों को अपने जैसा ही मानता है (आत्मा रूप ही समझता है) इस अवस्था में न किसी से विशेष मोह रहता है और न किसी के लिए शोक होता हैं। क्योंकि वह अपने और पराये में भेद नहीं रखता। सभी अपने जैसे हैं, सभी समान हैं, अतः न किसी से राग न द्वेष हो सकता है।

ऋषियों द्वारा निर्धारित मनुष्यों के चार आश्रमों में 'स्व' का - अपनत्त्व का क्रमशः विस्तार होता जाता है। गृहस्थ में जो अपनत्त्व अपने परिवार और कुछ विशिष्ट मित्रों के प्रति रहता है, वानप्रस्थ आश्रम में वही अनेकों परिवारों के लिए हो जाता है। वानप्रस्थी अपने घर को त्याग कर समाज के अधिकाधिक बच्चों को मुफ्त शिक्षा देता है, असहायों की सेवा करता है तथा प्राणिमात्र को आत्मवत् देखने के लिए कठोर तप करता है। उसकी साधना जब परिपक्व हो जाती है तो वह सन्यासी बनकर अजातशत्रु हो जाता है। तब वह किसी शरीर को नहीं, अपितु उसमें स्थित आत्मा को ही देखता है अतः आत्मा-आत्मा में कोई भेद नहीं करता। उसके लिए समस्त आत्माएं पृथक-पृथक होते हुए भी एक जैसी ही होती है। अतः उस के लिए सभी अपने होते हैं, कोई पराया नहीं होता। वह किसी की हानि करना, दुःख देना नहीं चाहता। उसकी कामना होती है। - 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्।।

उपरोक्त स्थिति की प्राप्ति ही मानव का चरम लक्ष्य हैं। परमेश्वर प्राणियों के प्रति भेद-भाव नहीं करता। सभी उसे समान रूप से प्रिय हैं। वह सभी की भलाई चाहता है। ईश्वर की स्तुति करने वाले मनुष्यों को भी चाहिये कि वे ईश्वर के गुणों को धारण करें, समस्त प्राणियों को अपना, अपने समान समझें और तदनुसार व्यवहार करें। यही स्वत्व का विस्तार है, यही मानव धर्म है।

(चलभाष- ९४५०००१४४१)

thearyasamaj.org

धरोहर.....

श्रद्धेय पं० रामचन्द्र जी देहलवी का पुण्य स्मरण

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

रामनवमी का पावन पर्व था। आर्य समाज का वार्षिक सम्मेलन चल रहा था। नगर में विशेष प्रसन्नता का वातावरण था और हम सभी गुरुकुल के छात्र स्वामी जी के साथ वार्षिक सम्मेलन देखने के लिए ततारपुर से पैदल ही आये थे। वहीं पर ठहर गये। मध्यान्ह के कार्यक्रम में अभी समय था। तभी स्वामी जी ने कहा-चलो धर्मपाल, देहलवी जी से मिलकर आते हैं। ब्रह्मचारी वेदपाल जी (वर्तमान डॉ० वेदपाल जी) बड़ौत भी साथ थे। एक ब्रह्मचारी कोई और था। हम आर्य समाज से पैदल ही उनके घर पर पहुँचे। उनसे मिलने की विशेष इच्छा थी। उनके विषय में जैसा सुना था कि वे आर्य समाज के बहुत बड़े विद्वान् हैं, शास्त्रार्थ-महारथी हैं, कुरान कण्ठस्थ है, बाइबिल पर भी अच्छी पकड़ है, अपने वेद-शास्त्रों के भी ज्ञात हैं, हैदराबाद के सत्याग्रह में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है, ऐसे महापुरुष के दर्शनों का सौभाग्य मिल जाये तो बस विशेष सौभाग्य की बात होगी, इसी उत्साह से स्वामी जी दर्शन कराने ले जा रहे थे और उनकी प्रेरणास्पद कहानियाँ भी बताते जा रहे थे। उनके घर पर उनके भांजे विमल आर्य जी मिले। बैठाया, पानी पिलाया और तब स्वामी जी से मिलाने के लिए देहलवी जी को अन्दर से लेकर आये। उन्हें कम्पन-वायु का रोग लग चुका था, शरीर कमजोर होने लगा था, लेकिन वाणी में माधुर्य, प्रसन्नता, उत्साह, आत्मीयता और सिद्धान्तनिष्ठा तथा महर्षि के प्रति निष्ठा को देखने का सौभाग्य एक साथ ही प्राप्त हो गया। स्वामी जी से कुशल-क्षेम पूछकर और अपनी कुशलता स्वामी जी को बताकर हमारी तरफ दृष्टिपात किया और बड़े आत्मीय मिलनसार की तरह प्रसन्न होकर कुछ प्रश्न किये। उनकी वार्ता से तथा स्नेहिल व्यवहार से वह घटना हमारे जीवन की एक धरोहर बन गयी। आज जब भी देहलवी जी की कोई चर्चा करता है तो वही दृश्य साक्षात् होकर मन में आह्लाद पैदा करता है। रात्रि के कार्यक्रम की चर्चा स्वामी जी ने की और उनके प्रवचन की स्वीकृति ली तथा कुछ आर्य समाज के विषय में वार्तायें हुई। गुरुकुल ततारपुर की प्रगति एवं हमारा परिचय भी स्वामी जी ने उनसे कराया। छोटी-सी आयु में जैसा सुना और जितना याद है वही हमारे लिए उस समय पर्याप्त था। स्वामी जी ने बताया कि देहलवी जी का भी जन्म रामनवमी वाले दिन ही हुआ था और आर्य समाज प्रतिवर्ष सम्मेलन पर रामनवमी के दिन उनका सम्मान करता है। इससे कार्यक्रम की शोभा में वृद्धि होती है। सम्भवतया इसीलिए मिलने गये थे। रात्रि के समय जब कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ तो उन्हें रिक्शा में बैठाकर लाया गया और मंच के पास कुर्सी पर बैठा दिया। उनके आते ही लोगों में श्रद्धा और प्रसन्नता समवेत दिखाई देने लगी। भजन-संगीत के पश्चात् मंत्री महोदय ने उनका परिचय दिया और अभिनन्दन किया। मुझे स्मरण आ रहा है कि उस दिन श्री रामगोपाल जी शालवाले भी दिल्ली से पधारे हुए थे। उन्होंने भी स्वागत में माल्यार्पण किया और भाषण भी सभी वक्ताओं के इन्हीं को इंगित करके दिये जा रहे थे जैसे किसी मुख्य अतिथि के आगमन पर उनकी प्रशंसा की जाती है। आज उनकी भव्यता और भी अच्छी लग रही थी। उनकी लम्बी मूँछें महाराणा प्रताप की याद दिला रही थीं और पगड़ी से भी किसी विद्वान पं० लेखराम जी की तरह शोभायमान थे। चेहरे की भव्यता वाणी की मधुरता के साथ और अधिक बढ़ गयी थी। आपने जो भाषण दिया लोगों ने वाह-वाह करना शुरू कर दिया। मुझे तो इतना ही याद है कि उन्होंने कुरान शरीफ के आधार पर मांस खाना निषेध बताया था कि जब कुरान में भी मांस खाना मना है फिर लोग मांस क्यों खाते हैं। उनके भाषण का जनता पर प्रभाव पड़ा देख उनके विषय में जिज्ञासा और बढ़ी। फिर आपकी लिखी पुस्तकें पढ़ीं। विमल आर्य जी से सम्पर्क बना जो आज तक भी बना हुआ है। वास्तव में उन जैसा विद्वान् धीर-गम्भीर, साहसी, बहादुर अब दिखाई नहीं देता। वे सदैव आर्य समाज की शान बनकर जिये और वरदान बनकर रहे। आर्य समाज हापुड़ को यह सौभाग्य मिला कि देहलवी जी ने बाद में हापुड़ को अपना स्थायी निवास बना लिया था जो आज भी विद्यमान है। वैसे आपका जन्म मध्य प्रदेश के नीमच शहर में हुआ था लेकिन आपको प्रसिद्धि दिल्ली में रहने पर प्राप्त हुई। आपके शास्त्रार्थ आर्य समाज का इतिहास बन गये। छोटी-छोटी बातों से बड़े-बड़े शास्त्रार्थ जीत लेते थे। आपने ही एक दिन बताया कि एक मौलवी से शास्त्रार्थ हो रहा था। वह मूर्ति का विरोध कर रहा था। देहलवी जी कहने लगे कि बिना मूर्ति तो आपका कोई काम नहीं चलता। इस पर वह उत्तेजित हो गया और इसी बात पर आर-पार की बाजी लग गयी। देहलवी जी मुस्कुराते हुए बोले कि बात पक्की करो। बात पक्की होने पर देहलवी जी बोले कि जेब से रूपया निकालो। उसने रूपया निकाल कर दिया तो उन्होंने उस सिक्के पर बनी मूर्ति दिखाते हुए कहा कि यह क्या है ?आप तो सदैव इसे जेब में रखते हैं। मौलवी शरमा गये। लोगों ने तालियाँ बताई और उन्हें विजयी घोषित किया। एक दिन चर्चा में बताया - मौलवी ने पूछा कि ऐसा काम बताओं जिसे करते-करते कभी कोई थके नहीं। मौलवी ने सोचा जो भी काम है कभी तो थकेगा ही। देहलवी जी पराजित हो जायेंगे। लेकिन आपने कहा कि जब तक व्यक्ति जीवित रहता है श्वास लेता हुआ कभी नहीं थकता । इस पर मौलवी उनका मुख देखते ही रह गये और शर्म अनुभव की। एक बार देहलवी जी एक मुस्लिम सम्मेलन में गये और मंच पर बोलने के लिए समय मांगा। मना करने पर बोले एक मिनट ही दे दीजिए तो अध्यक्ष ने कहा कि एक मिनट तो दे देंगे लेकिन शर्त है कि कुरान अथवा मुसलमानों के विषय में कुछ नहीं कहोगे। अपने ही विषय में कुछ कह देना। सोचा एक मिनट में क्या बिगड़ जायेगा। श्री देहलवी जी मंच पर आये और कहा कि भाइयो, हम आर्य (हिन्दू) लोगों में एक बहुत बड़ी अच्छाई है, विशेषता है कि आपस में भाई-बहिन होकर पवित्र सम्बन्ध रखते, विवाह करके पति-पत्नी नहीं बनते। इतना बोलते ही खलबली मच गयी और सारे सम्मेलन का स्वाद ही बिगड़ गया। इसीलिए काफिर को समय देने के लिए मना किया था, लेकिन अब तो वह दिग्विजयी देहलवी अपनी बात संक्षेप में कहकर गागर में सागर भर चुके थे। ऐसे महामनीषी विद्वान् लेखक- उपदेशक का पुण्य स्मरण करते हुए सादर नमन करते हैं।

प्रभो! आर्य समाज में फिर ऐसी शास्त्रार्थ-महारथी परम्परा में विद्वान् बनने की प्रेरणा प्रदान करें।

गुरूकुल पूठ,
गढ़मुक्तेश्वर- हापुड़
मंत्री-आर्य प्रतिनिधि सभा,
उ.प्र. लखनऊ
मो.९८३७४०२१६२

महिलाओं के गुण और गौरव

-कृपाल सिंह वर्मा

१. महाराज मनु ने कहा है।-

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राफला क्रिया।।

तथा

''सन्तुष्टो भार्यया भर्ता भर्त्रा भार्या तथैव च ।
यस्मिनेव कुले नित्यम्, कल्याणंतत्र वै ध्रुवम्।।

२. वैदिक काल में महिलाओं को सभी प्रकार के सामाजिक अधिकार प्राप्त थे। हमारा देश सब प्रकार से उन्नत तथा समृद्ध था। मुस्लिम सम्प्रदाय के आने से महिलाओं की दुर्दशा का इतिहास प्रारम्भ हो गया। पर्दा प्रथा आ गयी। महिलाओं की अशिक्षा के युग का प्रारम्भ हो गया। बाल विवाह प्रथा आ गयी। हजारों वर्षो तक देश परतन्त्र रहा हे। इसमें भी विशेष रूप से मुसलमान शासकों के राज्य में आर्य महिलाओं पर इतने अत्याचार हुए हैं कि इसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। पर्दा प्रथा तथा बाल विवाह जैसी कुप्रथाएं इसी की देन है।

३. महाभारत के पश्चात् इस देश में आध्यात्मिक अन्धकार इतना फैल गया कि लोग पत्थर को ही भगवान मानने लगे। क्या धर्म है, क्या अधर्म है, क्या सत्य है, क्या असत्य है क्या कर्तव्य है, क्या अकर्तव्य है?लोग पूर्ण रूप भ्रमित हो गये। दिशाहीन हो गये। पद-दलित हो गये।

४. बहुत समय बाद महर्षि दयानन्द सरस्वती का आविर्भाव हुआ। आध्यात्मिक अन्धकार समाप्त हुआ। वेदों का प्रकाश हुआ। वेद सब सत्य विधाओं का पुस्तक है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों का प्रचार किया, वेद विद्या का प्रचार किया। उन्होंने पर्दाप्रथा, बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं के विरूद्ध शक्तिशाली प्रचार किया। इसके पश्चात् कन्या गुरूकुलों की स्थापना हुई। आज देश में अनेक कन्या गुरूकुल सफलता पूर्वक चल रहे हैं। महिला शिक्षा उन्नति का मूल है। यदि माँ शिक्षित है तो पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। जिस देश में महिलाए शिक्षित वह पूर्ण देश ही शिक्षित हो जाता है।

गौरव :- महिलाएं परिवार का आधार होती है। महाराज मनु ने कहा है - ''गृहस्णी गृह मुच्यते।। गृहणी को ही घर कहते है। जिस मकान का महिलाएं त्याग कर देती वो घर के बजाय घेर बन जाता है।

जिस घर में महिलाएं प्रसन्न रहती है वह घर स्वर्ग बन जाता है। जिस घर में महिलाएं रूदन करती है वह नरक बन जाता है। जिन परिवारों में पति पत्नी के बीच में कलह होता है वे परिवार अपने आप ही नष्ट हो जाते हैं।

यदि हम अपने परिवार को समृद्ध देखना चाहते है। देश को शक्तिशाली देखना चाहते है। यदि आप शिवाजी जैसे वीरों से भारतमाता को गौरवान्वित करना चाहते है, राम जैसा पुत्र चाहते है, कृष्ण का पुनः आगमन चाहते है तो महिलाओं को शिक्षित करना होगा। तो महिलाओं का सम्मान करना होगा ।इति।

-२५३, शिव लोक कंकर खेड़ा, मेरठ

thearyasamaj.org

हम क्यों भटक रहे हैं ?

- श्री शिव कुमार शास्त्री (पूर्व सांसद)

[श्री शिव कुमार शास्त्री जी भारतीय लोकसभा के दो बार सांसद रहे थे। वे प्रसिद्ध नेता एवं संस्कृत के सुयोग्य विद्वान् थे। उनके द्वारा लिखित यह लेख् १६८२ में गुरुकुल प्रभात आश्रम के दशाब्दी समारोह पर प्रकाश्यमान स्मृति-ग्रन्थ 'दशाब्दी समारोह' में प्रकाशित हुआ था। उपयोगी समझकर इसे पुनः प्रसारित किया जा रहा है।]

अफ्रीका के हबशियों को जब अमेरिका की मण्डी में बेचने के लिए लाया जाता था। तब एक इंगलिश लेड़ी 'मिस स्टो' ने एक बूढ़े हबशी की जीवनी को 'अंकल टोम्स केबिन' नाम की पुस्तक के रूप में लिखा। उसे इस पुस्तक के लिखने पर जेल का दण्ड मिला, पर अन्त में उसके विचार विजयी हुए और हबशियों का बेचना बन्द हुआ।

इस पुस्तक में 'स्टो' ने कई बातें बहुत महत्वपूर्ण लिखी हैं। वह लिखती है कि ''जो लोग पराधीन होते हैं, उनमें दो बातें बहुत शीघ्र पनपती हैं, पहली तो यह कि उन लोगों को अपने पहले खान-पान, रहन-सहन, चाल-चलन और जीवन के सभी दूसरे मार्गो तथा साधनों से घृणा होने लगती है। दूसरी यह कि अपने मालिकों के खान-पान, रहन-सहन, चाल-ढाल, बोल-चाल तथा जीवन के सभी साधनों में रुचि बढ़ने लगती है। उनकी दासता जितनी पुरानी होती जाती है ये दोनों बातें उतनी गहरी स्थायी और सुदृढ़ होती जाती हैं। यदि इन दासों के लिए मालिकों की ओर से शिक्षा-दीक्षा का भी प्रबन्ध कर दिया जाये तो वे लोग इस शिक्षा के माध्यम से अपने आपको यहाँ तक बदल डालते हैं कि चमड़ी के बिना इनका पहचानना भी कठिन हो जाता है। ये अपनी सत्ता को, अपने अतीत जीवन को, अपने पुराने गौरव को यहाँ तक कि अपने बाप-दादों को भी भूलकर अपने को प्रत्येक बात में अपने स्वामियों के जीवन में बदलने के लिए यत्नशील रहते हैं, किन्तु ऐसा दिन कभी नहीं आयेगा कि अपने मालिकों के साथ एकम-एक कर सकें।

जो बातें इस देवी ने अपने गम्भीर चिन्तन के पश्चात् लिखी हैं, उनकी यथार्थता को हम भारत के आज के ढर्रे को देखकर अनुभव कर सकते हैं। हमें भौतिक स्वातन्त्र्य प्राप्त किए ३५ वर्ष हो गए, किन्तु मानसिक दृष्टि से हम अब भी दास हैं, अपितु वास्तविकता के उद्घाटन के लिए यह कहना अधिक सार्थक होगा कि दासता के रोग का उभार हमारी भौतिक स्वतन्त्रता के पश्चात् अधिक हुआ है। हम में अंग्रेजियत जितनी इन ३५ वर्षो में बढ़ी है, उतनी पहले के १५० वर्षो में भी नहीं आयी। आज तथाकथित सुसंस्कृत और बड़े घरों में बच्चे जन्म से ही अंग्रेजी बोलते हैं। जितने अंग्रेजी के माध्यम वाले शिक्षणालयों की दुकान आज चमक रही है पहले कहाँ थी ? इन स्कूलों में अपने बच्चों को केवल प्रवेश दिलाने के लिए ही अभिभावकों को महीनों दौड़-धूप करनी पड़ती है। आज अपनी इस स्थिति पर कोई विचार करने को उद्यत नहीं है कि हम कहाँ जा रहे हैं ? हमारा क्या बनेगा ?और हमारी इस स्थिति को देखकर संसार के दूसरे देश हमारे विषय में क्या धारणा बनाते हैं?

एक अमेरिकी पत्रकार श्री हैनरी सेंडर भारत में भ्रमण के लिए आये। भारत में भ्रमण करते हुए भारतीयों की स्थिति को देखकर जो प्रतिक्रिया उन पर हुई, वह अमेरिका में जाकर वहाँ के प्रसिद्ध पत्र 'प्रौग्रेसिव' में उन्होंने लिखी। उनके लेख का अपेक्षित भाग इस प्रकार है - 'अंग्रेजों के चले जाने के बाद भारत में ३० वर्षो में झण्डे के सिवाय और कोई परिवर्तन नहीं आया है। ....भारतीय आपस में एक दूसरे के साथ जिस तरह व्यवहार करते हैं, उनमें भी उनके औपनिवेशक मस्तिष्क की झलक मिलती है। ..... जब वे किसी भारतीय से ही बात करते है तो धीरे-धीरे उनका वार्तालाप अंग्रेजी में बदल जाता है। शायद भारतीय यह भूलना ही नहीं चाहते कि उन्हें उनके अंग्रेज शासकों ने लिखाया-पढ़ाया है। एक भारतीय व्यवहार और आचरण में अपने को योरोपीय से घटकर ही मानता है। जब वह किसी योरोपीय के साथ बात करे या रहे तो वह अपने को योरोपीय नौकर-सा मानता है। ..... जब मैं भारत पहुंचा तो मैंने बराबर हिन्दी में बातचीत करने की कोशिश की। लेकिन मुझे लगा कि यह व्यर्थ ही है, क्योंकि भारतीय हिन्दी में बात करना अपना अपमान समझते हैं।'

यह है हमारे चिन्तन और व्यवहार की प्रतिक्रिया। हम भारतीयों के लिए इससे अधिक लज्जा की और कोई बात नहीं हो सकती। आश्चर्य तो यह है कि हमारे इन व्यवहारों के कारण विदेशों से हमारे राजनयिकों का अनेक बार अपमान भी हुआ, परन्तु हम हैं कि जो उस स्थिति को बदलने को उद्यत नहीं हैं। यह बड़ी प्रसिद्ध घटना हमारी स्वतन्त्रता के प्रारम्भिक काल की है कि जब रूस में नियुक्त हमारे राजदूत ने अपने परिचय के कागजात अंग्रेजी में तैयार किये हुए प्रस्तुत किये तो रूस के अधिकारियों ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि पत्र भारत अथवा रूस की भाषा में ही लिखे जा सकते हैं।

वस्तुतः बात यह है कि इस दास मनोवृत्ति के रोग का ठीक-ठीक निदान ही नहीं हुआ। जब तक रोग के कारण तक न पहुंचा जाए तब तक ऊपर की लीपा-पोती से कुछ बनने वाला नहीं है। ये रोग के कीटाणु हमारे बच्चों के मन और मस्तिष्क में प्रवेश करते हैं उन्हें दी जाने वाली शिक्षा के माध्यम से। तथाकथित सुसंस्कृत घरानों में सारी शक्ति इस बात पर लग रही है कि उनका बच्चा जब पहले-पहले बोले तो अंग्रेजी में बोले। बड़े घरानों के छोटे-छोटे बालक जब फर्राटे से अंग्रेजी बोलते हैं तो उनके माता-पिता प्रसन्नता से गद्गद् हो जाते हैं और फिर आप आशा करते हैं कि उनमें स्वभाषा और संस्कृति के लिए राष्ट्रीय स्वाभिमान जागृत हो। वे तो यह धारणा बनाते हैं कि जो अंग्रेजी न पढ़ सकते और न ही बोल सकते वे पिछड़े हुए और असभ्य हैं।

अतः इसमें सुधार के लिए आवश्यकता है कि शिक्षा के ढ़ाँचे में आमूल-चूल परिवर्तन किया जाए। ये पब्लिक ओर कानवेन्ट स्कूल कठोरता से एक साथ समाप्त कर दिये जावें। अंग्रेजी के स्कूल और कॉलिज मैकाले ने भारतीयों को शिक्षित करने के लिए नहीं अपितु अंग्रेजों की भाषा समझकर भारतीयों पर शासन करने में सुविधा प्राप्त करने के लिए खोले थे। मैकाले के निम्न शब्द बहुत प्रसिद्ध हैं, इसलिए यहाँ उनका उद्धरण प्रासंगिकता को देखकर देना उचित ही होगा -

We must do our best to form a class who may be interpreter between us and the millions whom we govern. A class of person Indian in blood and colour, but English in tast in opinions in morals and in intellect.

आश्चर्य है कि भारत के स्वाधीन होने पर प्रत्येक राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री ने वर्तमान शिक्षा के ढांचे को भारत के लिए अनुपयुक्त बताया, इसे बदलने की बात भी कही, किन्तु हम देखते हैं कि परिवर्तन कुछ नहीं हुआ अपितु दास मनोवृत्ति की जकड़ पहले से और कड़ी होती जा रही है।

'फलक के नीचे से हम तो कभी के निकल जाते, मगर रास्ता न पाया।'

इस दिशा में लिखने के लिए बहुत कुछ है, किन्तु लेख को सीमा में रखना भी आवश्यक है।

शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। शारीरिक उन्नति के साधन ब्रह्मचर्य, व्यायाम और प्राणयाम, आत्मिक उन्नति के लिए यम, नियमादि को अपनाना आवश्यक है। सांसारिक उन्नति के लिए शिल्प, व्यवसाय, वाणिज्यादि साधन हैं, किन्तु प्रचलित प्रणाली से किसी एक उद्देश्य की पूर्ति भी तो नहीं होती। मोटे तौर पर इस पद्धति में अग्रलिखित त्रुटियाँ हैं -

१. सदाचार की कमी - मानवता के शत्रु काम, क्रोधादि को जीतने की शिक्षा का सर्वथा अभाव है। गाली-गलौच करना, अभक्ष्य भक्षण करना, सिगरेट, मद्य पीना आदि कुकर्म तो यहाँ उत्तराधिकार में प्राप्त होते हैं।

२. संस्कृति का अभाव - पाठ्यक्रम में निर्धारित ग्रन्थों में बी.ए. और एम.ए. तक जो विचार सामग्री विद्यार्थियों ने प्राप्त की है, उससे प्रभावित होना स्वाभाविक है, किन्तु ग्रन्थों में चाहे और जो कुछ हो पर आर्य-संस्कृति क्या है?यह उसमें नहीं है।

३. ब्रह्मचर्य का अभाव - ब्रह्मचर्य बिना गुरुओं के नियन्त्रण तथा सादे और तपोमय जीवन के बिना सम्भव नहीं है। उसका यहाँ सर्वथा अभाव है।

४. दूषित नागरिक रहन-सहन में निवास - चारों ओर सिनेमाओं की भरमार, सिनेमा कलाकारों के नाम और आकृतियों से बच्चा-बच्चा परिचित है, उस पर भी कोढ़ में खाज, घरों में टेलीविजन। तरंग में गुनगुनाने पर युवकों के मुख से कोई सिनेमा का गीत ही निकलेगा। किसी अच्छे कवि का भक्ति और देशोत्थान का गीत अपवाद की वस्तु है।

५. सहशिक्षा - प्राचीन मर्यादा थी कि बालक-बालिकाओं के विद्यालय पृथक्-पृथक् और दूर-दूर हों। लड़कियों की शिक्षा के लिए देवियाँ और बालकों को पढ़ाने के लिए पुरुष अध्यापक रहें। यह बहुत मनोवैज्ञानिक और दूरदर्शितापूर्ण पद्धति थी। प्रारम्भ में आर्यसमाज ने अपने शिक्षणालयों में यह दृढ़ता बरती भी, किन्तु समय का प्रभाव सब को बहा ले गया। उर्दू के शायर अकबर के शब्दों में -

'मयखानये रिफार्म की चिकनी जमीन पै।
वाहज का खानदान आखिर फिसल गया।।'

६. सांस्कृतिक कार्यक्रम - सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर असांस्कृतिक नृत्य, अभिनय आज के मन्त्रियों के सम्मान में हमारे बालक-बालिकाएं नाचने और गाने के कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं और मंत्रीजी प्रसन्न मुद्रा में उनकी सराहना करते हैं। यहाँ तो कुंए में भाग पड़ने वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

७. गृहस्थी चक्र का प्रभाव - शिक्षा काल में घर में ही रहने से कुटुम्बियों की चिन्ता, रोग, शोक, लड़ाई और झगड़ों के प्रभाव से बच्चे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते।

८. फीस के बोझ का दबाव - स्कूल और कॉलेजों की भारी-भरकम फीस का जुटाना भी एक समस्या है। निर्धन ट्यूशन पढ़ा-पढ़ा कर उसे जुटाने का यत्न करते हैं।

९. सादे रहन-सहन का अभाव - विद्यार्थी काल में भी व्यवसाध्य भूषाओं का प्रचलन।

शेष पृष्ठ.....६

thearyasamaj.org

जलियाँवाला बाग काण्ड

ब्रिटिश साम्राज्य पर बदनुमाकाला धब्बा

-स्व. राम कृष्ण खत्री

इतिहास साक्षी हैं कि प्रथम विश्व युद्ध में, जो कि १६१४ से १६१८ तक चार वर्ष चला था, मित्र राष्ट्रों में अकेला ब्रिटेन ही बढ़-चढ़ कर हिस्सा नहीं ले रहा था बल्कि उसके अधीन जितने भी राष्ट्र थे उन सबको इसमें झोंक दिया गया था। भारत को भी अपनी कोई स्वतंत्र हस्ती तो थी नहीं, अतः उसके सहस्त्रों युवकों को थोड़ा बहुत फौजी प्रशिक्षण देकर लड़ाई के मैदान में झोंक दिया गया था। आर्थिक शोषण की बात तो अलग थी।

मित्र राष्ट्रों ने वायदे भी कोई कम बढ़-चढ़ कर नहीं किए थे। ब्रिटेन भी किसी से पीछे नहीं था। सबसे प्रमुख व आकर्षक घोषणा थी कि यदि मित्र राष्ट्र इस युद्ध में जीत गए तो वे देखेगं कि संसार में कोई देश किसी का गुलाम न बना रहे। सच तो यह है कि इस घोषणा के पीछे उनकी एक मंशा थी कि गुलाम देश की जनता अपनी स्वतंत्रता के लिए हिले-ढुले नहीं। शान्त बनी रहे ताकि उनके अपने युद्ध प्रयासों में कोई बाधा न उत्पन्न हो।

परन्तु भारत के क्रान्तिकारी यह जानते थे कि कोई भी गुलाम देश बिना संघर्ष किये आजाद नहीं हुआ। अतः उन लोगों ने अपना आंदोलन कभी शिथिल नहीं होने दिया। १६१४ और १६१८ के बीच क्रान्ति के कई प्रयास हुए। इन्हीं में प्रमुख था अमेरिका में गदर पार्टी, की स्थापना जिसके अन्तर्गत अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हजारों की तादाद में एक जापानी जहाज से अस्त्र शस्त्र लाकर भारत के बन्दरगाह में उतरने की असफल चेष्टा हुई। इस प्रयास में कई साथी शहीद हुए और सैकड़ों की तादाद में गिरफ्तार कर जेल में बन्द कर दिए गए। हित पर भी कुछ साथी अंग्रेजों की पुलिस से बचते बचाते पंजाब पहुंच ही गये थे। ''कामागाटामारू जहाज काण्ड'' के नाम से यह घटना मशहूर है।

''गदर पार्टी'' के जो साथी किसी प्रकार बच-बचाकर पंजाब पहुंच गये थे उनमें करतार सिंह सराबा व अन्य साथियों ने राम बिहारी बोस एवं शचीन्द्र नाथ सान्याल जैसे महान क्रान्तिकारियों से मिलकर उत्तर भारत की कई छावनियों में हिन्दुस्तानी फौजियों को क्रांति हेतु तैयार कर लिया था परन्तु एक देशद्रोही की मुखबिरी की वजह से वह प्रयास भी असफल रहा था। उस घटना में सैकड़ों फौजी भाई गोली से उड़ा दिए गये थे व हजारों को जेल यात्राएं करनी पड़ी थी। यह सब फौजी अदालत द्वारा किया गया था।

इसी घटना के सिलसिले में ''प्रथम लाहौर षडयन्त्र केस'' के नाम से कई क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चलाया गया था। इसी केस के अन्तर्गत क्रान्तिकारियों करतार सिंह सराबा, विष्णु गणेश पिंगले, बख्शीश सिंह, सुरैन सिंह, सुरैन सिंह 'द्वितीय', हरनाम सिंह एवं जगत सिंह को फाँसी के फन्दे चूमने पड़े थे।

इसी बीच थोड़े - थोड़े अन्तराल से ''मैनपुरी षड़यन्त्र केस'' एवं ''बनारस षड़यन्त्र केस'' चले। ''मैनपुरी केस'' में गेंदालाल दीक्षित एवं ''बनारस केस'' में शवीन्द्र नाथ सान्याल प्रमुख अभियुक्त थे। दोनों केसों में किसी साथी को फाँसी तो नहीं दी गई थी, हां लम्बी सजाएं अवश्य दी गई थी। शचीन्द्र नाथ सान्याल को आजीवन काले पानी की सजा मिली थी और उन्हें अपनी सजा काटने हेतु ''अण्डमान'' भेज दिया गया था।

काला कानून-रौलट एक्ट

इधर ब्रिटिश शासन अपनी कुछ और ही योजना बना रहा था। युद्ध के दौरान किये गये ऊँचे वायदे कि युद्ध जीतने के बाद वे भारत को स्वायत शासन प्रदान करेंगे, ब्रिटेन को युद्ध जीतने के आसार जैसे ही नजर आने लगे, उसने अपना असली रूप दिखलाना शुरू किया। क्रांन्तिकारी गतिविधियों का मुकाबला करने के लिये एक ''रौलट कमीशन'' की स्थापना की गई और उसी की रिपोर्ट के आधार पर ६ फरवरी, १६१६ की इम्पीरियल लेजिस्लेटिव काउन्सिल में दो बिल पेश किए गए जिसके अन्तर्गत शासन को यह अधिकार दिए जाने थे कि बिना वारन्ट व बिना कोई कारण बताए जिसे चाहे पकड़ सके और विशेष अदालतों में मुकदमा चलाकर सख्त सजा दिलवा सके, जिसको कोई अपील भी न की जा सके।

गांधी जी ने बम्बई में २८ फरवरी, १६१६ को इन दोनों बिलों का सख्त विरोध किया था। जिस पर भी काउन्सिल में दोनों बिल १८ मार्च, १६१६ को पास करवा लिए गए। इसका विरोध काउन्सिल में तो हुआ ही, बाहर जनता ने भी जबरदस्त विरोध किया था।

गांधी जी की भूख हड़ताल

२४ मार्च, १६१६ को गांधी जी ने विरोध स्वरूप २४ घंटे का उपवास रखा और आह्वान किया कि पूरा देश ३० मार्च को शोक दिवस मनाए।

धीरे-धीरे असंतोष ने उग्र रूप धारण करना शुरू कर दिया। पहली अप्रैल, १६१६ को दिल्ली में जबरदस्त दंगा हो गया। दुकानों व व्यापारिक संस्थानों को बन्द करा रहे जुलूस पर पुलिस ने गोलियां चलाई जिसमें कई कार्यकर्ता शहीद हुए व सैकड़ों घायल हो गए।

गाँधी जी गिरफ्तार

६ अप्रैल १६१६ को गांधी जी बम्बई से दिल्ली के लिए रवाना हुए। १० अप्रैल को बाम्बे-बड़ौदा सेन्ट्रल इण्डिया ट्रेन से सफर करते समय शासन की ओर से उन्हें एक नोटिस तामील की गई तथा कोर्स कला स्टेशन पर ट्रेन से उतार कर गांधी जी मथुरा भेज दिए गए। साथ ही एक आदेश द्वारा उनका दिल्ली व पंजाब प्रदेश में प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। गांधी जी इस आदेश को मानने से इन्कार कर पंजाब के गुड़गांव जिले के पलबल स्टेशन पहुंचे। वहां उन्हें गिरफ्तार कर बम्बई ले जाया गया और बम्बई शहर से बाहर जाने की पाबन्दी लगा दी गई। १० अप्रैल को ही गांधी जी ने देशवासियों को संदेश दिया कि रौलट एक्ट जैसे काले कानून के रहते किसी के लिए भी सम्मानपूर्वक रहना सम्भव नहीं है। उसी दिन पंजाब के कई प्रमुख नेताओं को भी गिरफ्तार कर लिया गया।

गांधी जी को गिरफ्तारी पर चारों ओर दंगे

गांधी जी की गिरफ्तारी पर १० अप्रैल की दिल्ली में आम हड़ताल हुई। उसी दिन लाहौर और अमृतसर में भंयकर दंगे हुए। जैसा कि होता आता है पुलिस ने दोनों जगह जम कर जनता पर गोलियां चलाई जिसमें मरने वालों की संख्या काफी थी।

कलकत्ता में जनता का आक्रोश

१२ अप्रैल, १६१६ को कलकत्ता में भी जुलूस व सभाओं का आयोजन किया गया वहां भी जनता नियंत्रण से बाहर हुई और पुलिस ने अपनी कार्यवाही की।

लाहौर में दंगा, चार अंग्रेज मारे गए

१२ अप्रैल, १६१६ को लाहौर में भी जनता का आक्रोश चरम सीमा पर था जनता आपे से बाहर थी। उत्तेजना में उन्होंने चार अंग्रेज व्यापारियों को मौत के घाट उतार दिया।

जलियाँवाला बाग-नर संहार

अमृतसर में भी जनता का रोष कम नहीं था। १३ अप्रैल, १६१६ को रौलट एक्ट एवं गांधी जी की गिरफ्तारी के विरोधस्वरूप वहां के जलियांवाला बाग में एक विशाल सभा का आयोजन किया गया था।

जलियांवाला बाग पवित्र स्वर्ण मन्दिर के निकट चारों ओर ऊँची-ऊँची दीवारों से घिरा हुआ था। बाग में प्रवेश के लिए केवल एक सकरा गलियारा ही था। उस दिन बैशाखी का पर्व भी था। धारा १४४ की परवाह न करते हुए, गैर सरकारी अनुमान से लगभग बीस हजार का जन समूह वहां एकत्रित था।

श्री हंसराज जनसमूह को सम्बोधित कर रहे थे कि जिलाधीश के आदेश पर फौजी कमाण्डर डायर अपने साथ एक पूरी सशस्त्र कम्पनी लेकर वहां पहुंचा और बिना किसी चेतावनी के अपने सिपाहियों को जनसमूह पर गोलियाँ चलाने का आदेश दे दिया तथा रायफलों से तब गोलियाँ चलवाता रहा जब तक उनमें को सब गोलियां खत्म नहीं हो गई। शुरू में खड़े होकर गोलियां चलाई गई और जब देखा गया कि लोग बचाव हेतु लेट गए हैं तो लेट कर निहत्थी जनता पर गोली वर्षा की गई। उस दिन गैर सरकारी अनुमान से मरने वालों की संख्या लगभग सोलह सौ थी जब कि सरकारी आंकड़े १६५० गोलियां चलाने की बात तो स्वीकार करते हैं किन्तु मृतकों की संख्या पांच-छः सौ मात्र बताते हैं।

शासन को विश्वास था कि इस गोलीबारी से जनता आतंकित हो जाएगी परन्तु हुआ इससे उल्टा। इस घटना से पूरे राष्ट्र में क्रोध की लहर दौड गई। १५ अप्रैल को तो ऐसा प्रतीत होता था। कि मानों पंजाब में खुली क्रान्ति का नजारा हो। वहां की स्थिति का अनुमान तो इसी से लगाया जा सकता है कि शासन की ओर से लाहौर की जनता पर हवाई जहाज से बम गिराए गए तथा मशीन गनों द्वारा गोलियां बरसाई गई। पंजाब के गुजरानावाला, लाहौर और अमृतसर जिलों में मार्शल ला लागू कर दिया गया।

फौजी शासन में हैवानियत के कारनामे

फौजी शासन में निहत्थी व बेगुनाह जनता पर जो-जो अमानुषिक अत्याचार ढाए गए उसकी कल्पना मात्र से रोंगटे खड़े हो जाते है। निम्न विवरणों से पता चलता हैं कि अपने को सभ्य कहलाने वाली अंग्रेज फौज किसहद तक क्रूर हो सकती है :-

१. अधिकांश निर्दोष व्यक्तियों को नंगा कर शहर के चौराहों पर उनके हाथ-पैर रस्सी से खम्भों में बांध कर उन पर हन्टरों की वर्षा की गई। उसमें भी तीन चार लोगों की मृत्यु की खबर है। किन्तु सरकार का कहना था कि ''किसी की मृत्यु नहीं हुई। १५ अप्रैल, १६१६ से १५ मई १६१६ के बीच तीन जिलों में ३२ व्यक्तियों को हन्टर मारे गए। औसतन हर व्यक्ति को ''मात्र'' ग्यारह हन्टर मारे गए।

२. हजारों विद्यार्थियों को १६-१६ मील पैदल चल कर स्कूलों में हाजिरी देने के लिए बाध्य किया गया, तथा सैकड़ों छात्रों व शिक्षकों को गिरफ्तार कर नजरबन्द कर दिया गया। और तो और ६ से ७ वर्ष की आयु के बच्चों को परेड में खड़ा कर ब्रिटिश झण्डे को सलाम करने पर बाध्य किया गया।

३. दीवारों पर चिपकाए गए मार्शल ला पोस्टरों की सुरक्षा की जिम्मेदारी मकान मालिकों पर जबरन सौंपी गई।

४. मार्शला ला के कायदे कानूनों से नावाकिफ शादी में शामिल पूरे बरातियों पर सबके सामने चौराहों पर हन्टर लगाये गए।

५. इस्लामिया स्कूल के छः विद्यार्थियों को इस लिए कोड़े लगाए गए चूंकि वे ज्यादा लम्बे थे।

६. लोह के पिंजरे नगर के

शेष पृष्ठ.....६

thearyasamaj.org

श्रीयुत श्री शोभाराम प्रेमी जी, महान विभूति की भव्य आत्म गाथा

शोभा सी काया, श्वेत सी छाया, दिव्य आभा पाई आपने।
शुभ्र, शोभा, शांत, शुद्ध सा कंचन गृहस्थ चमकाया आपने।
शिष्टाचार की शिला पर शक्ति का परिचय दे LIFE सार्थक की आपने।
शरीर पा गंभीरता, नीति निपुणता, संयम, त्याग, भी तपाया आपने।
शुद्ध तोषक शयन कर, आपत्ति काल के कर्म भी निभाये आपने।
शुभ कर्म कर ब्रह्ममयज्ञ से ज्ञान वृद्धि कर अज्ञान का उपचार किया आपने।
शालीन वेशभूषा धारण कर गौरवान्वित किया, मानव देह को आपने।
शासन सद्व्यवहार का चला, स्वागत सत्कार का चरखा चलाया आपने।
शोभा नाम सार्थक कर रचा, सुनाया महा-काव्य आपने।
शोभा युक्त जीवन में शाश्वत इतिहास भी समझा आपने।
शीघ्र दुष्कृत्यों का घोर विरोध कर, दुष्परिणाम से पहले ज्ञान दीप जला दिया आपने।
शौक-धनुर्धर, कुश्ती कर, राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान पाया आपने।
शुभ्र वस्त्र पहन, ख्याति पा भजन माला पहन, जीवन साधा आपने।
शुचित मन पा, सुसंस्कारों को कर धनी पहन धर्म-रास किया आपने।
शुभोकामना गृहस्थ की कर, सह धर्मिणी वरण की आपने।
शुद्धि संस्कार घोषित कर अधर्म धाराशायी किया आपने।
शुभंकर बन, लेखिनी, वाणी का सौम्य परिचय दे, नाम रोशन किया आपने।
शान रखी वैदिक धर्म की, वेद-आर्य धर्म ही अपनाया आपने।
शास्त्र युद्ध कर, पाखंडों की इतिश्री भी की आपने।
शाश्वत दृष्टांत दे शंकाओं का निराकरण किया आपने।
शास्त्रार्थ कर ''मत्वा सीवर्यान्त करमाणी'' जीवन ही जिया आपने।
शीश उठा अराधना कर, आर्य संस्कृति को पक्ष धर बनाया आपने।
शीशम सा MIND ले बुराई को विध्वंस कर सत्कर्म को अपनाया आपने।
शिरोमणि बन मनुस्मृति के नियम भी निभाये आपने।
शुरू कर मार्ग दर्शन, आर्य प्रवचन सुना संकट से उबारा आपने।
शीर्ष सुषैण वैद्य सम बन, मानव-राजरोगों को भी उपचार किया आपने।
शांत अस्तित्व पा ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' वेद विचार ही तो स्पष्ट किया आपने।
शीत युद्ध वालों के छक्के छुड़ा, अटल आर्य जन में जान डाली आपने।
शत्रुध्न राज सत्ता का न कर प्रलोभन, दृढ़ इच्छाशक्ति-सिंहासन पा लिया आपने।
शर्त ''विनाशकाले विपरीत बुद्धि'' को बुद्धिबल से ही ठुकरा दिया आपने।
शब्दों में ब्रह्ममांड चक्र का क्रम पिरोकर, स्वर्ग ही धरती पर ला दिया आपने।
शतायु भोग, आपने जीवन-सूत्र में धर्म उपदेश सुना, सुतुष्टि ही दी आपने।
शुभम नभ में तो आपकी ''जीवेद शरदः'' शतम् की दुन्दुभि बजी, नहीं सुनी आपने।
शोभा ''साधनाम-निर्मलता के करम'' की भी शोभा बढ़ाई आपने।
शूरमा शोभा की शान में देव-देवांगनाएं भी फूल बिखेरें, देखे होंगे आपने।
शत्-शत् नमन हो जीवन-प्रणाली को, जिसका वैदिक जीवन दर्शन साक्षात्कार कराया आपने।
शुभकामना की है 'विजय' ने कि देव-दूत भी शहनाई बजा आपके सुर में रमें, जो दिये है आपने।
पुनः शतशः 100% नमन भी आपको।

विजय कुमारी, खानपुर।

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर का 46वाँ वार्षिकोत्सव

आर्य समाज हरजेन्द्र नगर, कानपुर-७ का ४६वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक १६ अप्रैल से १६ अप्रैल २०१५ तक बड़ी धूमधाम से मनाया जायेगा। दिनांक १६ अप्रैल को सायं ३ बजे से ६ बजे तक शोभा यात्रा निकाली जायेगी। दिनांक १६ अप्रैल को सायं ६:३० से रात १०:३० बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन दिनांक १८ अप्रैल को प्रातः ७ बजे से ११ बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन व सायं ६:३० बजे से रात १०:३० बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन दिनांक १६ अप्रैल को प्रातः ७ बजे से १२ बजे तक आर्य महिला सम्मेलन व शंका समाधान मध्यान्ह १२ बजे से ३ बजे तक ऋषि लंगर सायं ६:३० से रात १०:३० तक यज्ञ, भजन व प्रवचन होंगे।

समारोह में स्वामी विवेकानन्द सरस्वती अलीगढ, आचार्य वीरेन्द्र वैदिक सहारनपुर, पं. दिनेश दत्त आर्य दिल्ली, श्री राम सेवक आर्य हमीरपुर आदि पधार रहे हैं।

अतएव सभी धर्म प्रेमी बंधुओं से निवेदन है कि उक्त तिथियों पर सपरिवार इष्ट मित्रों सहित पधार कर उत्सव को सफल बनावें व प्रवचनों को सुन जीवन धन्य बनायें।

विनोद कुमार गुप्ता
अंतरंग सदस्य

श्री कृपाल सिंह वर्मा को पत्नी शोक

श्री कृपाल सिंह वर्मा शिव लोक कालोनी कंकर खेड़ा, मेरठ की पत्नी श्रीमती चन्द्रवर्ती देवी का देहावसान दिनांक २२.३.२०१५ को अल्पकालिक अस्वस्थता के बाद हो गया।

आर्यमित्र परिवार की ओर से उनके निधन पर हार्दिक शोकाभिव्यक्ति करता हूँ। प्रभु दिवंगतात्मा को सद्गति एवं सभी दुखी परिजनों को मनःशान्ति व धैर्य धारण की शक्ति दे।

-सम्पादक

आर्य समाज बुढाना में पारायण यज्ञोत्सव

आर्य समाज बुढाना मुजफ्फरनगर ने दिनांक २४, २५ व २६ अप्रैल दिन शुक्रवार, शनिवार व रविवार को पारायण यज्ञ का आयोजन किया है। जिसमें आमंत्रित विद्वान आचार्य भगवान देव जी, श्री संजीव रूप बदांयू, श्री योगेन्द्र आचार्य होशंगाबाद, म.प्र. श्री नरेश निर्मल जी व श्रीमती सुदेश आर्य आदि है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा एवं मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती भी कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगे।

यज्ञोत्सव का कार्यक्रम दिनांक २४.४.२०१५ दिन शुक्रवार प्रातः ७ बजे से १० बजे तक यज्ञ स्थान आर्य कन्या इंटर कालेज पैठ बाजार बुढाना दिनांक २५/४/२०१५ दिन शनिवार समय प्रातः ७ बजे से १० बजे तक यज्ञ, स्थान डी.ए.वी. इण्टर कालेज, बुढ़ाना। दिनांक २६.४.१५ दिन रविवार समय प्रातः ७ से १० बजे तक यज्ञ-स्थान डी.ए.वी पब्लिक स्कूल बुढाना में सम्पन्न होंगे।

अरविन्द कुमार, मंत्री

पृष्ठ.....४ का शेष

स्कूलों तक तो निर्धारित वेश (यूनिफार्म) में कुछ सुविधा प्राप्त हो जाती है, किन्तु कॉलेज में पहुंचते ही यह बांध टूट जाता है और वहाँ का छात्र प्रतिदिन एक नई भूषा में श्रेणी में पहुंचता है। इससे असमर्थ छात्रों में हीनता और डाह के भाव जगकर सामाजिक जीवन को विषाक्त बनाते हैं।

१०. अपव्यय - अध्ययन काल में ही फिजूलखर्ची का भाव बन जाता है। विशेषकर कॉलेज, हॉस्टलों में एक-दूसरे छात्र के कमरे में जाने पर कॉफी, चाय, जूस, पान, सिगरेट आदि पेश किये जाते हैं। अध्ययन काल में इस अपव्यय का अत्याचार अभिभावकों को सहना पड़ता है और बाद में यह स्वभाव उन्हें जीवन-भर दुःख देता है।

११. गुरु गौरव का अभाव - प्राचीन परम्परा में ईश्वर के बाद माता-पिता से भी बढ़कर गुरु के प्रति आदर के भाव होते थे। मनु ने गुरु को माता और पिता दोनों का समन्वित रूप बताकर आदेश दिया है कि उससे कभी द्रोह न करे, किन्तु आज की शिक्षा में यह भावना लुप्त हो गई है। अतः गुरु के आचार से प्रेरणा लेने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

१२. देश सेवा की भावना का अभाव - पढ़ाई में जब फीस चुकाई जाती है तो उनके निर्माण में किसी का क्या एहसान है?अतः राष्ट्र के लिए त्याग और बलिदान के भाव जागृत ही नहीं होते।

१३. आत्मसम्मान का अभाव - किसी प्रकार भी सही नौकरी प्राप्त करना ही परम लक्ष्य है। प्रार्थना-पत्र के नीचे 'मोस्ट ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट' लिखने में कोई संकोच नहीं होता। इतने पर भी नौकरी नहीं मिलती। हमारे अध्ययन काल में हास्य-रस के कवि हमारे एक साथी ने काशी में १६३४ में एक कविता लिखी थी कि

'मोस्ट ओबिडियेन्ट सर्वेन्ट
लिखना बहुत पुरानी बात हो गई।

अब इससे आगे पढ़कर लिखना चाहिए कि मोस्ट ओबिडियेन्ट हूँ, आपके सर्वेन्ट के सर्वेन्ट का सर्वेन्ट हूँ। तब शायद नौकरी की कुछ आशा हो सकती है।

१४. नास्तिकता - जो छात्रावासों और कक्षाओं का ढांचा है उसमें ईश्वर-भक्ति, आत्मिक चिन्तन का नितान्त अभाव है। अतः खाना-पीना और मौज उड़ाना यही जीवन का उद्देश्य बनता है। प्राचीन समय में यह विचारधारा 'पिब, भुङ्क्ष्व, रमस्व च' राक्षसों की थी, आर्यों की नहीं। स्पष्ट है कि इस विपरीत चक्र को सुधारने का काम गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही कर सकती है। ●●●

पृष्ठ.....५ का शेष

चौराहों पर रख कर उनमें लोगों को पकड़ कर बन्द रखा गया जिनमें कई सम्भ्रान्त व्यक्ति भी थे।

७. सजा देने के ऐसे-ऐसे नए तरीके अपनाए गए जिसकी कल्पना भी किसी देश का सभ्य समाज नहीं कर सकता जैसे लोगों को जमीन पर पेट के बल रेंग कर चलाया गया।

८. पंजाब की भीषण गर्मी में भी गिरफ्तार लोगों को खुली ट्रकों में भरकर १५-१५ घंटे खड़ा रखा गया।

९. फरार व्यक्तियों को हाजिर करने के लिए उनके प्रियजनों को बंधक बना कर उनकी जायदाद जब्त अथवा नष्ट कर दी गई।

१०. सजा के बतौर हजारों हिन्दुस्तानियों की घरों की बिजली और पानी के कनेन्शन काट दिए। यूरोपियनों के रहने के लिए हिन्दुस्तानियों के घर जबरन खाली कराए गए। यूरोपियनों के प्रयोग हेतु जिस किसी भी हिन्दुस्तानी के पास कार आदि वाहन थे उन्हें जबरन छीन लिया गया।

११. कई जगह फौजी अदालतों में ८५२ व्यक्तियों पर मुकदमें चलाए गए जिनमें ५८२ की सजाए सुनाई गई एवं बीसों को फांसी की सजा दी गई।

ब्रिटिश सत्ता इसी भ्रम में रही कि यह काण्ड भारतीय जनमानस को सदा आतंकित करता रहेगा। परन्तु वे यह सोच भी न सके कि यही घटना आगे चल कर ब्रिटिश साम्राज्य की ताबूत में कील ठोंकने का काम करेगी। आगे चलकर महान क्रान्तिकारी ऊधम सिंह ने १३ मार्च, १६४० को इस काण्ड के एक जिम्मेदार सर माइकल ओ डायर को लन्दन में गोली मारकर धराशायी कर दिया था।

इतिहास गवाह है कि 'जलियांवाला बाग काण्ड' के बाद स्वतंत्रता संग्राम में इतनी तेजी आई कि चन्द वर्षो के अन्दर ही अंग्रेज भारत स्वतंत्र करने को विवश हुए।

-सौजन्य से
-उदय खत्री

thearyasamaj.org

वेद पारायण यज्ञ का रजत जयंती महोत्सव

दिनांक १६ मई से २० मई २०१५ स्थान-ग्राम नेनोरा द्वारा पिपलिया मण्डी जिला मन्दसौर म.प्र. में विशाल वेद पारायण यज्ञ का रजत जयंती महोत्सव का आयोजन किया गया है। यह वेद पारायण यज्ञ १९९१ से अनवरत रूप से चल रहा है। इस वर्ष २०१५ को रजत जयन्ती महोत्सव के रूप में विशाल स्तर पर मनाने का निश्चय किया गया है।

यज्ञ महोत्सव की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती दिल्ली, यज्ञ के ब्रह्मा डा. जयेन्द्र जी आचार्य गुरूकुल नोएडा, उ.प्र. होंगे। आमंत्रित विद्वान स्वामी आर्यवेश दिल्ली, स्वामी धर्मानंन्द जी उड़ीसा, स्वामी सुमेघानन्द जी सांसद मुख्य अतिथि के रूप में तथा विशेष आमंत्रित अतिथि गण में श्री मिठाई लाल सिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई तथा श्री अरूण अबरोल जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई होंगे।

दिनांक १६ मई २०१५ को विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया है। दिनांक १७ से २० मई २०१५ तक प्रातः एवं सायं काल यज्ञ भजन व प्रवचन होंगे।

दिनांक १७ मई २०१५ युवक सम्मेलन दिनांक १८ मई २०१५ महिला सम्मेलन दिनांक १९ मई २०१५ सत्यार्थ प्रकाश सम्मेलन का आयोजन दिन में १ बजे से ३ बजे तक होगा। दिनांक २० मई २०१५ को प्रातः ९बजे पारायण यज्ञ की पुर्णाहुति होगी। मध्यान्ह प्रीति भोज रखा गया है।

इस महोत्सव स्थल के छोटे से ग्राम में २५ दैनिक अग्निहोत्री परिवार २५ यज्ञ कुण्डों पर यज्ञमान के रूप में यज्ञ को सम्पन्न करेंगे। लगभग ५० विद्वानों, सन्यासियों व भजनोपदेशकों आदि को आमंत्रित किया गया है। बाहर से आनेवाले सज्जनों के लिए भोजन व आवास की व्यवस्था है।

सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)
मो. ९८६६६६८१३०

हर्षित स्वागत पल

कितना अच्छा लग रहा है आप का आना यहां
दिल से स्वागत आप सब का, मैं कर रहा खुशिया बयां
प्रयाग धरा, कृतार्थ हुई थी, महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों से
नागवासुकी वो पवित्र धरा है, विश्राम स्थल था महर्षि जहां।।
वैदिक सत्य के आप है मोती, सत्य के धागे भी है आप,
आओ पिरोए, मोतियों को है दयानन्द की जिसमें छाप
आप सब विद्वान, वैदिकी हो, भटके जगत की रोशनी
जो सत्य का था अलख पारखी, नित ओम की करता था जाप,
उसने जग को बतायी सत्य क्या है? सत्य में समाहित है दिया।
प्रयाग धरा, कृतार्थ हुई थी, महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों से
नागवासुकी वो पवित्र धरा है, विश्राम स्थल था महर्षि जहां।
तीन नदियों का यह संगम, संदेशा देने को है आतुर
गंगा-यमुना-सरस्वती की, धाराओं में सुनों वेदों के सुर
धर्म, ईश्वर और आनन्द, मिलकर बनता परम आनन्द
सत्य रूप, सन्यासी के जैसा है धैर्य वीरता में अति चतुर
सत्य सारथी देवेन्द्र बनकर, संग दल-बल पधारे हैं यहां
प्रयाग धरा, कृतार्थ हुई थी, महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों से
नागवासुकी वो पवित्र धरा है, विश्राम स्थल था महर्षि जहां
जग को है संदेश देना, जहां असत्य है उसको न मानो
जिसका निरीक्षण तू स्वयं है करता सत्य वही, उसको ही जानो,
पुष्प सुगन्धित होता वही है जहां सत्य सुगन्धी वास है होता
असत्य क्या सत्य से सिखाओ, यही महर्षि की सीख उसे ही मानो
'सागर' पुजारी उस धरा का, दयानन्द पधारे थे वह धरा जहां
प्रयाग धरा, कृतार्थ हुई थी, महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों से
नागवासुकी वो पवित्र धरा है, विश्राम स्थल था महर्षि जहां

-बी.पी. सागर
अंतरंग सदस्य
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.,
लखनऊ

रामनवमी पर्व का आयोजन

आर्य समाज आर ५/५०ए, राजनगर गाजियाबाद में दिनांक २८ मार्च २०१५ को अपरान्ह ३ बजे रामनवमी पर्व का आयोजन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्री ओम प्रकाश आर्य हापुड़ ने की तथा श्री बनारसी सिंह वरिष्ठ पत्रकार दिल्ली, आचार्य संजय याज्ञिक मेरठ व श्री श्याम वीर राघव दिल्ली आदि ने उद्‌बोधित किया।

वैदिक संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम के आदर्शो पर विद्वानों के प्रवचन व भजन सुनने धर्म प्रेमी बंधु सपरिवार शामिल हुए।

सत्यवीर चौधरी
मंत्री

महर्षि दयानन्द का १९१वाँ जन्मदिवस समारोह सम्पन्न

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद नई दिल्ली व संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक १५ फरवरी २०१५ समय सायं ३ बजे से ६:३० बजे तक स्थान संस्कृत अकादमी सभागार, झण्डेवालान, निकट करोल बाग बस टर्मिनल, नई दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती का १९१वां जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

समारोह की अध्यक्षता स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती ने की। मुख्य अतिथि डा. अशोक कुमार चौहान संस्थापक अध्यक्ष ऐमिटी शिक्षण संस्थान थे। मुख्य वक्ता प्रो. महावीर अग्रवाल कुलपति उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय हरिद्वार, डा. आनन्द कुमार आई.पी.एस., आचार्य गवेन्द्र शास्त्री वैदिक विद्वान डा. धर्मपाल आर्य पूर्व कुलपति गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार, आचार्य वेद प्रकाश क्षोत्रिय आदि थे।

कार्यक्रम के समापन के पश्चात ऋषि लंगर का सुन्दर प्रबंध किया गया।

डा. अनिल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष

स्थापित सन् १९०८

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस

पत्रालय-कन्या गुरुकुल, पिन-२०४१०४,
जिला-हाथरस (उ.प्र.)

प्रवेश प्रारम्भ

- कक्षा शिशु से कक्षा नवम् तक।
- विद्याविनोद प्रथमवर्ष (११), उत्तरमध्यमा प्रथम वर्ष (११)।
- विद्याविनोद (समकक्ष इण्टर) तक विज्ञान वर्ग की भी शिक्षा।
- विद्यालंकार/वेदालंकार प्रथम वर्ष, शास्त्री प्रथम वर्ष।
- आचार्य प्रथम वर्ष।
- प्रयाग संगीत समिति, इलाहाबाद की गायन, वादन में संगीत प्रभाकर तक की परीक्षा।
- आई.टी.आई (एन.सी.वी.टी.) कम्प्यूटर (कोपा) (कक्षा १०) विज्ञान विषय सहित/इण्टरमीडिएट उत्तीर्ण एवं कटिंग स्वीईग (कक्षा ८ उत्तीर्ण) १ वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अगस्त माह में प्रवेश प्रारम्भ होंगे।
- प्रारम्भ से ही हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी अनिवार्य प्राचीन विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा।
- छात्रावास व्यवस्था।

रुपये १५०.०० भेजकर नियमावली मंगायें।
कन्या गुरुकुल अलीगढ़-आगरा मार्ग पर सासनी हाथरस के मध्य स्थित है।
मोबाइल-०९४५८४८०७८१, ०९६२७०४०९९९,
०९२५८०४०११९

डॉ. पवित्रा विद्यालंकार
मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या

विद्वान् लेखकों से निवेदन

इस वर्ष मई मास में महात्मा नारायण स्वामी जी के जन्म दिन के अवसर पर आर्य मित्र का महात्मा नारायण स्वामी विशेषांक निकालने का निश्चय किया गया है। अतः सभी विद्वज्जन स्वामी जी से संदर्भित अपने अपने लेख अतिशीघ्र हमें भेजने की कृपा करें ताकि समय से उत्तम लेखों से पूर्ण विशेषांक हम पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर सकें।

-सम्पादक

आर्य समाज वेद व्यास डी.ए.वी. विद्यालय
नई दिल्ली में

वैदिक धर्म चर्चा एवं आध्यात्मिक सम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज वेद व्यास डी.ए.वी. विद्यालय विकासपुरी नई दिल्ली में दिनांक २५ एवं २६ मार्च को प्रातः ८:३० से दोपहर १:३० बजे तक वैदिक धर्म चर्चा एवं आध्यात्मिक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें विद्वानों ने जीवन निर्माण के लिए वैदिक धर्म को अपनाने का सन्देश दिया।

-प्रधान

thearyasamaj.org

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्स:०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

आर्य समाज चौक, इलाहाबाद में आयोजित अन्तरंगाधिवेशन के कतिपय चित्र

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।